क्या है श्रीमद्भगवद्गीता ?

योगेश्वर भगवान श्रीकृष्ण के अनुसार - श्रीमदभगवद्गीता १५/२०

इति गुह्यतमं शास्त्रमिदमुक्तं मयानघ । एतद्बुद्ध्वा बुद्धिमान्स्यात्कृतकृत्यश्च भारत।

अर्थात हे अर्जुन ! मेरे द्वारा गीता नामका जो यह अत्यन्त रहस्यभरा शास्त्र उपदेशित किया गया है इसके ज्ञानसे मनुष्य श्रेष्ठ बुद्धिमान होकर कृतकृत्य हो जाता है।

य इमं परमं गुह्यं मद्भक्तेष्वभिधास्यति। भक्तिं मयि परां कृत्वा मामेवैष्यत्यसंशयः।। 18/68

न च तस्मान्मनुस्येषु कश्चिन्मे प्रियकृत्तमः। भविता न च मे तस्मादन्यः प्रियतरो भुवि ।। 18/69

अर्थात जो व्यक्ति कर्मयोग ज्ञानयोग तथा भक्तियोगसे मेरी पराभक्ति करके इस परम रहस्यमय गीता के अध्यात्मज्ञान को मेरे भक्तों को प्रदान करता है वह मुझमें ही वास करता है। समस्त मानवजाति में उस व्यक्ति से बड़ा मेरा प्रिय कार्य करने वाला न तो कोई और होता है और न भविष्य में होगा।

महर्षि वेदव्यासजी महाराजने भगवद्गीता के महात्म्य में लिखा है–

सर्वोपनिषदो गावो दोग्धा गोपाल नन्दनः। पार्थो वत्स सुधीर्भोग्ता दुग्धं गीतामृतं महत्।।

अध्यात्मज्ञान के भण्डार जो समस्त उपनिषदें हैं वह यदि एक गाय के समान हैं तो भगवान कृष्ण उस गाय को दुहने वाले ग्वाले हैं। उस गाय को पगुराने वाला बछड़ा अर्जुन हैं। गाय दूध तभी देना प्रारम्भ करती है जब बछड़ा पहले उसके स्तनों को चूस कर उसे पगुराता है। जब अर्जुन ने अपना अज्ञान व मोह प्रकट किया व कई प्रश्न पूछे तभी भगवान श्रीकृष्ण के श्रीमुख से गीता रूपी दुग्धामृत प्रवाहित हुआ। जैसे दुधारू गाय का सारा दूध बछड़ा ही नहीं पीता ऐसे ही इस गीतारूपी दूध को केवल अर्जुनरूपी बछड़े ने ही नहीं पिया बल्कि समस्त जिज्ञासू व ज्ञान के पिपासू लोग इसे जबसे गीता का दुग्धामृत प्रकट हुआ तबसे पीते चले आ रहे हैं और आगे भी पीते ही रहेंगे। ऐसा अदभुत है यह गीतामृत।

गीता शास्त्रमिदं पुण्यं यः पठेत् प्रयतः पुमान् ।विष्णोर्पदमवाप्नोति भयशोकादिवर्जितः।।

भगवद्गीता एक ऐसा महान पवित्र शास्त्र है जिसे जो कोई भी व्यक्ति पढ़ता है (उस पर श्रद्धा लाता है, उसे समझता है, उसके अनुसार जीवनचर्या चलाता है तथा उसे आत्मसात करता है) वह भय और शोक से रहित हो जाता है। हर व्यक्ति अपने भविष्य के लिए भयभीत व चिंतित होता है तथा भूतकाल में हुई घटनाओं व हानियों के परिणामस्वरूप शोकाकुल होता है। गीता, भूत व भविष्य के शोक व भय इन दोनों से मुक्त करके वर्तमान को आनन्द व ज्ञान के साथ जीने की योग्यता व शक्ति प्रदान करती है।

स्वामी विवेकानन्दजी महाराज ने श्रीमदभगवद्गीता के सम्बन्ध में कहा है–

"Bhagwat Gita is a poem which is held to be the crown Jewell of the whole Indian literature".

अर्थात भगवत गीता एक ऐसी कविता है जिसे समस्त भारतीय वाङमय का मुकुटमणि माना जाता है।

एक अंग्रेज दार्शनिक विलियम हमवोल्ट गीता के बारे में लिखते हैं–

***Bhagwat Geeta is the most beautiful perhaps the only true philosophical song existing in any known tongue."*

अर्थात भगवतगीता, दुनियां की सभी ज्ञात भाषाओं में, सायद सबसे खूबसूरत एकमात्र सच्चा दार्शनिक संगीत है।

<< और अधिक जानकारी के लिए क्लिक करें >>